चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम: दैनिक जागरण

दिनांक: 17.11.2020 पृष्ठ संख्या: 4 कॉलम: 3-8

वीसी की सलाह | हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में ज्वार की उन्नत किस्म सीएसवी 44 एफ विकसित करने वाले विज्ञानी हुए सम्मानित

किसानों की दशा और दिशा को ध्यान में रखकर शोध करें विज्ञानी

जागरण संवाददाता, हिसार : किसी भी सामूहिक काम को करने के लिए टीम भावना का होना बहुत ही जरूरी है। टीम भावना से किए गए हर काम में सफलता सुनिश्चित है। यह बातें चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कही। वे विश्वविद्यालय में ज्वार की उन्नत किस्म विकसित करने वाले विज्ञानियों की टीम के सम्मान में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने विश्वविद्यालय के विज्ञानियों की सराहना करते हुए कहा कि यह टीम भावना का ही परिणाम है कि वर्तमान में विश्वविद्यालय दिन दोगुनी रात चोगुनी उन्नति के पथ पर अग्रसर है। आज विश्वविद्यालय के विज्ञानियों द्वारा विकसित विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों का ही नतीजा है कि प्रदेश का देश के खाद्यान्न भंडारण में अहम योगदान है। कार्यक्रम का आयोजन कुलपति सचिवालय में किया गया। इस दौरान उन्नत किस्म विकसित करने वाली विज्ञानियों की टीम को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। उन्होंने विज्ञानियों से आह्वान किया कि वे किसानों की दशा व दिशा को ध्यान में रखकर ही शोध कार्य करें, ताकि उनकी आर्थिक स्थिति ओर अधिक मजबूत हो सके।

एचएयू में ज्वार की उन्नत किस्म विकसित करने वाले विज्ञानियों के साथ कुलपति प्रोफेसर समर सिंह व अन्य। • विज्ञप्ति

इन विज्ञानियों को किया गया सम्मानित : विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डा. एके छाबड़ा के अनुसार सीएसवी 44 एफ किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के विज्ञानियों डा. पम्मी कुमारी, डा. सत्यवान आर्य, डा. एसके पाहुजा, डा. एनके ठकराल एवं डा. डीएस फौगाट की टीम की मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डा. सतपाल, डा. जयंती टोकस, डा. हरीश कुमार, डा. विनोद मलिक एवं डा. सरिता देवी का भी विशेष सहयोग रहा है। इन्हीं विज्ञानियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए इन्हें सम्मानित किया गया। है। विभागाध्यक्ष ने बताया कि ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। एचएयू में विकसित ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की गई है।

चारे के लिए उत्तम है यह किस्म ; विज्ञानियों की मानें तो चारा उत्पादन, पौष्टिकता एवं रोग प्रतिरोधकता की दृष्टि से यह एक उत्तम किस्म है। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 407 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। जोकि ज्वार की अन्य बेहतर किस्मों सीएसवी 21 एफ और सीएसवी 30 एफ से क्रमशः 7.5 फीसद व 5.8 फीसद अधिक है।

सीएसवी 44 एफ किस्म की यह है खासियत

विज्ञानियों ने बताया कि सीएसवी 44 एफ किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है, जिसकी वजह से पशु के दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी करती है। इस किस्म में मिठास 10 फीसद से भी अधिक व स्वादिष्ट होने के कारण पशु इसको खाना अधिक पसंद करते हैं। सिफारिश किए गए उचित खाद व सिचाई प्रबंधन के अनुसार यह किस्म अधिक पैदावार देने में सक्षम है। अधिक बारिश व तेज हवा चलने पर भी यह किस्म गिरती नहीं है। ज्वार में प्राकृतिक तौर पर पाया जाने वाला विषैला तत्व धूरिन इस किस्म में बहुत ही कम है। सीएसवी 44 एफ किस्म तनाछेदक कीट के प्रति प्रतिरोधी है व इसमें पत्तों पर लगने वाले रोग भी नहीं लगते।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम ....अमर उजाला....

दिनांक ..17.11.2020.... पृष्ठ संख्या ....4.... कॉलम ....5-8....

टीम भावना से मिलती है हर काम में सफलता : प्रो. समर

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में सोमवार को ज्वार की उन्नत किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिकों के सम्मान में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान चारा अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. एसके पाहुजा, डॉ. एनके ठकराल, डॉ. डीएस फौगाट सहित डॉ. सतपाल, डॉ. जयंती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक एवं डॉ. सरिता देवी को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर कुलपति ने कहा कि किसी भी सामूहिक काम को करने के लिए टीम भावना का होना बहुत ही जरूरी है। टीम भावना से किए गए हर काम में सफलता सुनिश्चित है।

आज विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों का ही नतीजा है कि प्रदेश का देश के खाद्यान्न भंडारण में अहम योगदान है। विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एके छाबड़ा के अनुसार ज्वार की इस किस्म को

ज्वार की उन्नत किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिकों के साथ कुलपति प्रोफेसर समर सिंह व अन्य।

विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। एचएयू में विकसित ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की गई है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.......हरि भूमि.......

दिनांक 17.11.2020 पृष्ठ संख्या....9.... कॉलम....2-4....

टीम भावना से मिलती है सफलता

- ज्वार की उन्नत किस्म सीएसवी 44 एफ विकसित करने वाले एचएयू वैज्ञानिकों के सम्मान में कार्यक्रम आयोजित

हरिभूमि न्यूज ▶▶हिसार

हिसार। ज्वार की उन्नत किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिकों के साथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह व अन्य। फोटोः हरिभूमि

किसी भी सामूहिक काम को करने के लिए टीम भावना का होना बहुत ही जरूरी है। टीम भावना से किए गए हर काम में सफलता सुनिश्चित है। यह बात हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने विवि में ज्वार की उन्नत किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिकों की टीम के सम्मान समारोह में कही। उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की सराहना करते हुए कहा कि यह टीम भावना का ही परिणाम है कि वर्तमान में विश्वविद्यालय उन्नति के पथ पर अग्रसर है। आज विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों का ही नतीजा है कि प्रदेश का देश के खाद्यान भंडारण में अहम योगदान है। इस दौरान उन्नत किस्म विकसित करने वाली वैज्ञानिकों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

इन वैज्ञानिकों को किया गया सम्मानित

आनुवंशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एके छाबड़ा के अनुसार सीएसवी 44 एफ किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. एसके पाहुजा, डॉ. एनके ठकराल एवं डॉ. डीएस फोगाट की टीम की मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डॉ. सतपाल, डॉ. जयंती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक एवं डॉ. सरिता देवी का भी विशेष सहयोग रहा है। इन्ही वैज्ञानिकों के उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए इन्हें सम्मानित किया गया। है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम....पंजाब केसरी....
दिनांक 17.11.2020....पृष्ठ संख्या....2....कॉलम....1-3....

'टीम भावना से मिलती है हर काम में सफलता'

ज्वार की उन्नत किस्म सी.एस.वी. 44-एफ विकसित करने वाले वैज्ञानिकों के सम्मान में कार्यक्रम आयोजित

ज्वार की उन्नत किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिकों के साथ कुलपति प्रो. समर सिंह व अन्य।

हिसार, 16 नवम्बर (ब्यूरो): किसी भी सामूहिक काम को करने के लिए टीम भावना का होना बहुत ही जरूरी है। टीम भावना से किए गए हर काम में सफलता सुनिश्चित है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहे।

वे विश्वविद्यालय में ज्वार की उन्नत किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिकों की टीम के सम्मान में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान संबोधित कर रहे थे। उन्होंने वैज्ञानिकों की सराहना करते हुए कहा कि यह टीम भावना का ही परिणाम है कि वर्तमान में विश्वविद्यालय दिन दौगुणी रात चौगुणी उन्नति के पथ पर अग्रसर है। आज विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों का ही नतीजा है कि प्रदेश का देश के खाद्यान भण्डारण में अहम योगदान है। कार्यक्रम का आयोजन कुलपति सचिवालय में किया गया। इस दौरान उन्नत किस्म विकसित करने वाली वैज्ञानिकों की टीम को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे किसानों की दशा व दिशा को ध्यान में रखकर ही शोध कार्य करें ताकि उनकी आर्थिक स्थिति ओर अधिक मजबूत हो सके।

इन वैज्ञानिकों को किया गया सम्मानित

विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा के अनुसार सी.एस.वी. 44 एफ किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. एस.के. पाहुजा, डॉ. एन.के. ठकराल एवं डॉ. डी.एस. फौगाट की टीम की मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डॉ. सतपाल, डॉ. जयंती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक एवं डॉ. सरिता देवी का भी विशेष सहयोग रहा है। इन्हीं वैज्ञानिकों के उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए इन्हें सम्मानित किया गया। है। एच.ए.यू. में विकसित ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यत: कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की गई है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम दैनिक भास्कर

दिनांक 17.11.2022 पृष्ठ संख्या 4 कॉलम 3-4

ज्वार की उन्नत किस्म विकसित करने वाली एचएयू टीम सम्मानित

ज्वार की उन्नत किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिकों संग वीसी।

हिसार | एचएयू के वीसी प्रो. समर सिंह ने कहा कि विवि के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों का ही नतीजा है कि प्रदेश का देश के खाद्यान भण्डारण में अहम योगदान है। वे विवि में ज्वार की उन्नत किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिकों की टीम के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा के अनुसार सीएसवी 44 एफ किस्म को विकसित करने में चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. एस.के. पाहुजा, डॉ. एन.के. ठकराल एवं डॉ. डी.एस. फोगाट की टीम की मेहनत रंग लाई है। डॉ. सतपाल, डॉ. जयंती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक एवं डॉ. सरिता देवी का विशेष सहयोग रहा है। इन्हीं वैज्ञानिकों को सम्मानित किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	**17.11.2020**	——	--

टीम भावना से मिलती है हर काम में सफलता : सिंह

● ज्वार की उन्नत किस्म सीएसवी 44 एफ विकसित करने वाले एचएयू वैज्ञानिकों के सम्मान में कार्यक्रम आयोजित

ज्वार की उन्नत किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिकों के साथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह व अन्य।

हिसार, 16 नवंबर (सुरेंद्र सोढी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि किसी भी सामूहिक काम को करने के लिए टीम भावना का होना बहुत ही जरूरी है। टीम भावना से किए गए हर काम में सफलता सुनिश्चित है। वे विश्वविद्यालय में ज्वार की उन्नत किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिकों की टीम के सम्मान में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान संबोधित कर रहे थे। उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की सराहना करते हुए कहा कि यह टीम भावना का ही परिणाम है कि वर्तमान में विश्वविद्यालय दिन दौगुणी रात चौगुणी उन्नति के पथ पर अग्रसर है। आज विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों का ही नतीजा है कि प्रदेश का देश के खाद्यान भण्डारण में अहम योगदान है। कार्यक्रम का आयोजन कुलपति सचिवालय में किया गया। इस दौरान उन्नत किस्म विकसित करने वाली वैज्ञानिकों की टीम को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे किसानों की दशा व दिशा को ध्यान में रखकर ही शोध कार्य करें ताकि उनकी आर्थिक स्थिति और अधिक मजबूत हो सके।

इन वैज्ञानिकों को किया गया सम्मानित

विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा के अनुसार सीएसवी 44 एफ किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. एस.के. पाहुजा, डॉ. एन.के. ठकराल एवं डॉ. डी.एस. फोगाट की टीम की मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डॉ. सतपाल, डॉ. जयंती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक एवं डॉ. सरिता देवी का भी विशेष सहयोग रहा है।

किस्म की यह है खासियत

सीएसवी 44 एफ किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है, जिसकी वजह से पशु के दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी करती है। इस किस्म में मित्रस 10 प्रतिशत से भी अधिक व स्वादिष्ट होने के कारण पशु इसको खाना अधिक पसंद करते हैं। सिफारिश किए गए उचित खाद व सिचाई प्रबंधन के अनुसार यहकिस्म अधिक पैदावारदेने में सक्षम है। अधिक बारिश व तेज हवा चलने पर भी यह किस्म गिरती नहीं है। ज्वार में प्राकृतिक तौर पर पाया जाने वाला विषैला तत्व धूरिन इस किस्म में बहुत ही कम है। सीएसवी 44 एफ किस्म तनाछेदक कीट के प्रति प्रतिरोधी है व इसमें पत्तों पर लगने वाले रोग भी नहीं लगते।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूं	**17.11.2020**	——	--

ज्वार की उन्नत किस्म सीएसवी 44 एफ विकसित करने वाले एचएयू वैज्ञानिकों को किया सम्मानित

हिसार। किसी भी सामूहिक काम को करने के लिए टीम भावना का होना बहुत ही जरूरी है। टीम भावना से किए गए हर काम में सफलता सुनिश्चित है। ए विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय में ज्वार की उन्नत किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिकों की टीम के सम्मान में सोमवार को एक कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की सराहना करते हुए कहा कि यह टीम भावना का ही परिणाम है कि वर्तमान में विश्वविद्यालय दिन दौगुणी रात चौगुणी उन्नति के पथ पर अग्रसर है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों का ही नतीजा है कि प्रदेश का देश के खाद्यान भण्डारण में अहम योगदान है। कार्यक्रम का आयोजन कुलपति सचिवालय में किया गया। इस दौरान उन्नत किस्म विकसित करने वाली वैज्ञानिकों की टीम को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे किसानों की दशा व दिशा को ध्यान में रखकर ही शोध कार्य करें ताकि उनकी आर्थिक स्थिति ओर अधिक मजबूत हो सके।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूं	**17.11.2020**	——	--

पशुपालन। मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक व स्वादिष्ट, पशुओं को आएगी पसंद

ज्वार की उन्नत किस्म सीएसवी 44 से दुग्ध उत्पादन में होगी बढ़ोतरी

हिसार(सच कहूँ/संदीप सिंहमार)। पेट भरने के लिए कितना भोजन की जरूरत होती है,उतना ही स्वाद भी जरूरी माना जाता है। यदि भोजन स्वाद हो तो इंसान हो या पशु अपना पेट पूरे आनंद से भर सकते हैं। हाल ही में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार की कृषि वैज्ञानिकों ने सीएसवी 44 एफ किस्म नाम से जवार जिस उन्नत किस्म को इजाद किया है,उसे पशु खाने के लिए अच्छी तरह से पसंद करेंगे। इस उन्नत किस्म की विशेषता यह है कि इसमें मिठास का स्तर 10 प्रतिशत से से भी अधिक है। इस किस्म को इजाद करने वाले कृषि वैज्ञानिकों सहित विश्वविद्यालय के उप कुलपति प्रोफेसर समर सिंह का दावा है कि इस किस्म पर तेज हवा व ज्यादा

बारिश का भी किसी प्रकार का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। जिन पशुओं को जवार की की उन्नत किस्म चारे के रूप में खिलाई जाएगी, उनके दुग्ध में भी बढ़ोतरी होगी।

प्रोटीन व पाचनशीलता भी अधिक

सीएसवी 44 एफ किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है, जिसकी वजह से पशु के दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी करती है। इस किस्म में मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक व स्वादिष्ट होने के कारण पशु इसको खाना अधिक पसंद करते हैं। सिफारिश किए गए उचित खाद व सिचाई प्रबंधन के अनुसार यह किस्म अधिक पैदावार देने में सक्षम है। अधिक बारिश व तेज हवा चलने पर भी यह किस्म गिरती नहीं है। ज्वार में प्राकृतिक तौर पर पाया जाने वाला विषैला तत्व धूरिन इस किस्म में बहुत ही कम है। सीएसवी 44 एफ किस्म तनाछेदक कीट के प्रति प्रतिरोधी है व इसमें पत्तों पर लगने वाले रोग भी नहीं लगते। वैज्ञानिकों के अनुसार चारा उत्पादन, पौष्टिकता एवं रोग प्रतिरोधकता की दृष्टि से यह एक उत्तम किस्म है। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 407 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। जोकि ज्वार की अन्य बेहतर किस्मों सीएसवी 21 एफ और सीएसवी 30 एफ से क्रमश- 7.5 प्रतिशत व 5.8 प्रतिशत अधिक है।

कुलपति ने वैज्ञानिकों को किया सम्मानित

कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि किसी भी सामूहिक काम को करने के लिए टीम भावना का होना बहुत ही जरूरी है। टीम भावना से किए गए हर काम में सफलता सुनिश्चित है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की सराहना करते हुए कहा कि यह टीम भावना का ही परिणाम है कि वर्तमान में विश्वविद्यालय दिन दौगुणी रात चौगुणी उन्नति के पथ पर अग्रसर है। आज विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों का ही नतीजा है कि प्रदेश का देश के खाद्यान भण्डारण में अहम योगदान है। इस दौरान उन्नत किस्म विकसित करने वाली वैज्ञानिकों की टीम को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे किसानों की दशा व दिशा को ध्यान में रखकर ही शोध कार्य करें ताकि उनकी आर्थिक स्थिति और अधिक मजबूत हो सके।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिसार टूडे	**17.11.2020**	——	--

'टीम भावना से मिलती है हर काम में सफलता'

ज्वार की उन्नत किस्म सीएसवी 44 एफ विकसित करने वाले एचएयू वैज्ञानिकों के सम्मान में कार्यक्रम आयोजित

टुडे न्यूज़ | हिसार

किसी भी सामूहिक काम को करने के लिए टीम भावना का होना बहुत ही जरूरी है। टीम भावना से किए गए हर काम में सफलता सुनिश्चित है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय में ज्वार की उन्नत किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिकों की टीम के सम्मान में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की सराहना करते हुए कहा कि यह टीम भावना का ही परिणाम है कि वर्तमान में विश्वविद्यालय दिन दौगुणी रात चौगुणी उन्नति के पथ पर अग्रसर है। आज विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों का ही नतीजा है कि प्रदेश का देश के खाद्यान भण्डारण में अहम योगदान है। कार्यक्रम का आयोजन कुलपति सचिवालय में किया गया। इस दौरान उन्नत किस्म विकसित करने वाली वैज्ञानिकों की टीम को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

ज्वार की उन्नत किस्म विकसित करने ाले वैज्ञानिकों के साथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह व अन्य।

उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे किसानों की दशा व दिशा को ध्यान में रखकर ही शोध कार्य करें ताकि उनकी आर्थिक स्थिति ओर अधिक मजबूत हो सके। विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा के अनुसार सीएसवी 44 एफ किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. एस.के. पाहुजा, डॉ. एन.के. ठकराल एवं डॉ. डी.एस. फोगाट की टीम की मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डॉ. सतपाल, डॉ. जयंती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक एवं डॉ. सरिता देवी का भी विशेष सहयोग रहा है। इन्ही वैज्ञानिकों के उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए इन्हें सम्मानित किया गया। है। विभागाध्यक्ष ने बताया कि ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। एचएयू में विकसित ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की गई है।

किस्म की यह है खासियत

सीएसवी 44 एफ किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है, जिसकी वजह से पशु के दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी करती है। इस किस्म में मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक व स्वादिष्ट होने के कारण पशु इसको खाना अधिक पसंद करते हैं। सिफारिश किए गए उचित स्वाद व सिचाई प्रबंधन के अनुसार यह किस्म अधिक पैदावार देने में सक्षम है। अधिक बारिश व तेज हवा चलने पर भी यह किस्म गिरती नहीं है। ज्वार में प्राकृतिक तौर पर पाया जाने वाला विषैला तत्व धूरिन इस किस्म में बहुत ही कम है। सीएसवी 44 एफ किस्म तनाछेदक कीट के प्रति प्रतिरोधी है व इसमें पत्तों पर लगने वाले रोग भी नहीं लगते। वैज्ञानिकों के अनुसार चारा उत्पादन, पौष्टिकता एवं रोग प्रतिरोधकता की दृष्टि से यह एक उत्तम किस्म है। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 407 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। जोकि ज्वार की अन्य बेहतर किस्मों सीएसवी 21 एफ और सीएसवी 30 एफ से क्रमशः 7.5 प्रतिशत व 5.8 प्रतिशत अधिक है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरियाणा वाटिका	**17.11.2020**	——	--

टीम भावना से मिलती है हर काम में सफलता : प्रोफेसर समर सिंह

ज्वार की उन्नत किस्म सीएसवी 44 एफ विकसित करने वाले एचएयू वैज्ञानिकों के सम्मान में कार्यक्रम आयोजित

वाटिका@हिसार। किसी भी सामूहिक काम को करने के लिए टीम भावना का होना बहुत ही जरूरी है। टीम भावना से किए गए हर काम में सफलता सुनिश्चित है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय में ज्वार की उन्नत किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिकों की टीम के सम्मान में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान संबोधित कर रहे थे। उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की सराहना करते हुए कहा कि यह टीम भावना का ही परिणाम है कि वर्तमान में विश्वविद्यालय दिन दौगुणी रात चौगुणी उन्नति के पथ पर अग्रसर है। आज विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों का ही नतीजा है कि प्रदेश का देश के खाद्यान भण्डारण में अहम योगदान है। कार्यक्रम का आयोजन कुलपति सचिवालय में किया गया। इस दौरान उन्नत किस्म विकसित करने वाली वैज्ञानिकों की टीम को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे किसानों की दशा व दिशा को ध्यान में रखकर ही शोध कार्य करें ताकि उनकी आर्थिक स्थिति ओर अधिक मजबूत हो सके।

इन वैज्ञानिकों को किया गया सम्मानित : विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा के अनुसार सीएसवी 44 एफ किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. एस. के. पाहुजा, डॉ. एन.के. ठकराल एवं डॉ. डी.एस. फोगाट की टीम की मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डॉ. सतपाल, डॉ. जयंती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक एवं डॉ. सरिता देवी का भी विशेष सहयोग रहा है। इन्ही वैज्ञानिकों के उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए इन्हें सम्मानित किया गया। है। विभागाध्यक्ष ने बताया कि ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। एचएयू में विकसित ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की गई है।

किस्म की यह है खासियत : सीएसवी 44 एफ किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है, जिसकी वजह से पशु के दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी करती है। इस किस्म में मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक व स्वादिष्ट होने के कारण पशु इसको खाना अधिक पसंद करते हैं। सिफारिश किए गए उचित खाद व सिचाई प्रबंधन के अनुसार यह किस्म अधिक पैदावार देने में सक्षम है। अधिक बारिश व तेज हवा चलने पर भी यह किस्म गिरती नहीं है। ज्वार में प्राकृतिक तौर पर पाया जाने वाला विषैला तत्व धूरिन इस किस्म में बहुत ही कम है। सीएसवी 44 एफ किस्म तनाछेदक कीट के प्रति प्रतिरोधी है व इसमें पत्तों पर लगने वाले रोग भी नहीं लगते। वैज्ञानिकों के अनुसार चारा उत्पादन, पौष्टिकता एवं रोग प्रतिरोधकता की दृष्टि से यह एक उत्तम किस्म है। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 407 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। जोकि ज्वार की अन्य बेहतर किस्मों सीएसवी 21 एफ और सीएसवी 30 एफ से क्रमशः 7.5 प्रतिशत व 5.8 प्रतिशत अधिक है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	**16.11.2020**	——	--

ज्वार की उन्नत किस्म सीएसवी 44 एफ विकसित करने वाले एचएयू वैज्ञानिकों के सम्मान में कार्यक्रम आयोजित

टीम भावना से मिलती है हर काम में सफलता : प्रो. समर सिंह

पांच बजे न्यूज

हिसार। किसी भी सामूहिक काम को करने के लिए टीम भावना का होना बहुत ही जरूरी है। टीम भावना से किए गए हर काम में सफलता सुनिश्चित है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय में ज्वार की उन्नत किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिकों की टीम के सम्मान में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान संबोधित कर रहे थे। उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की सराहना करते हुए कहा कि यह टीम भावना का ही परिणाम है कि वर्तमान में विश्वविद्यालय दिन दौगुणी रात चौगुणी उन्नति के पथ पर अग्रसर है। आज विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों का ही नतीजा है कि प्रदेश का देश के खाद्यान भण्डारण में अहम योगदान है। कार्यक्रम का आयोजन कुलपति सचिवालय में किया गया। इस दौरान उन्नत

किस्म विकसित करने वाली वैज्ञानिकों की टीम को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे किसानों की दशा व दिशा को ध्यान में रखकर ही शोध कार्य करें ताकि उनकी आर्थिक स्थिति ओर अधिक मजबूत हो सके।

इन वैज्ञानिकों को किया गया सम्मानित

विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा के अनुसार सीएसवी 44 एफ किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. एस.के. पाहुजा, डॉ. एन.के. ठकराल एवं डॉ. डी.एस. फोगाट की टीम की मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डॉ. सतपाल, डॉ. जयंती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक एवं डॉ. सरिता देवी का भी विशेष सहयोग रहा है। इन्ही वैज्ञानिकों के उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए इन्हें सम्मानित किया गया। है। विभागाध्यक्ष ने बताया कि ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। एचएयू में विकसित ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की गई है।

किस्म की यह है खासियत

सीएसवी 44 एफ किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है, जिसकी वजह से पशु के दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी करती है। इस किस्म में मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक व स्वादिष्ट होने के कारण पशु इसको खाना अधिक पसंद करते हैं। सिफारिश किए गए उचित खाद व सिचाई प्रबंधन के अनुसार यह किस्म अधिक पैदावार देने में सक्षम है। अधिक बारिश व तेज हवा चलने पर भी यह किस्म गिरती नहीं है। ज्वार में प्राकृतिक तौर पर पाया जाने वाला विषैला तत्व धूरिन इस किस्म में बहुत ही कम है। सीएसवी 44 एफ किस्म तनाछेदक कीट के प्रति प्रतिरोधी है व इसमें पत्तों पर लगने वाले रोग भी नहीं लगते। वैज्ञानिकों के अनुसार चारा उत्पादन, पौष्टिकता एवं रोग प्रतिरोधकता की दृष्टि से यह एक उत्तम किस्म है। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 407 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। जोकि ज्वार की अन्य बेहतर किस्मों सीएसवी 21 एफ और सीएसवी 30 एफ से क्रमशः 7.5 प्रतिशत व 5.8 प्रतिशत अधिक है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	**16.11.2020**	——	--

ज्वार की उन्नत किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिक सम्मानित

हिसार/16 नवंबर/रिपोर्टर

किसी भी सामूहिक काम को करने के लिए टीम भावना का होना बहुत ही जरूरी है। टीम भावना से किए गए हर काम में सफलता सुनिश्चित है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे ज्वार की उन्नत किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिकों की टीम के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने वैज्ञानिकों की सराहना करते हुए कहा कि यह टीम भावना का ही परिणाम है कि वर्तमान में विश्वविद्यालय दिन दौगुणी रात चौगुणी उन्नति के पथ पर अग्रसर है। आज विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों का ही नतीजा है कि प्रदेश का देश के खाद्यान भण्डारण में अहम योगदान है। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे किसानों की दशा व दिशा को ध्यान में रखकर ही शोध कार्य करें ताकि उनकी आर्थिक स्थिति ओर अधिक मजबूत हो सके। विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एके छाबड़ा के अनुसार सीएसवी 44 एफ किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. एसके पाहुजा, डॉ. एनके ठकराल एवं डॉ. डीएस फोगाट की टीम की मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डॉ. सतपाल, डॉ. जयंती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक एवं डॉ. सरिता देवी का भी विशेष सहयोग रहा है। इन्ही वैज्ञानिकों के उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए इन्हें सम्मानित किया गया। है। विभागाध्यक्ष ने बताया कि ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	**16.11.2020**	——	--

टीम भावना से मिलती है हर काम में सफलता: प्रोफेसर समर सिंह

ज्वार की उन्नत किस्म सीएसवी 44 एफ विकसित करने वाले एचएयू वैज्ञानिकों के सम्मान में कार्यक्रम आयोजित

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। किसी भी सामूहिक काम को करने के लिए टीम भावना का होना बहुत ही जरूरी है। टीम भावना से किए गए हर काम में सफलता सुनिश्चित है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय में ज्वार की उन्नत किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिकों की टीम के सम्मान में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान संबोधित कर रहे थे। उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की सराहना करते हुए कहा कि यह टीम भावना का ही परिणाम है कि वर्तमान में विश्वविद्यालय दिन दौगुणी रात चौगुणी उन्नति के पथ पर अग्रसर है। आज विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों का ही नतीजा है कि प्रदेश का देश के खाद्यान भण्डारण में अहम योगदान है।

हिसार। ज्वार की उन्नत किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिकों के साथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह व अन्य।

इन वैज्ञानिकों को किया गया सम्मानित

विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ए. के. छाबड़ा के अनुसार सीएसवी 44 एफ किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. एस.के. पाहुजा, डॉ. एन.के. ठकराल एवं डॉ. डी.एस. फोगाट की टीम की मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डॉ. सतपाल, डॉ. जयंती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक एवं डॉ. सरिता देवी का भी विशेष सहयोग रहा है। इन्हीं वैज्ञानिकों के उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए इन्हें सम्मानित किया गया। है। ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। एचएयू में विकसित ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की गई है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम दैनिक जागरण

दिनांक 17.11.2020 पृष्ठ संख्या 4 कॉलम 3-5

कृषि महाविद्यालय के कार्यकारी डीन होंगे डा. छाबड़ा

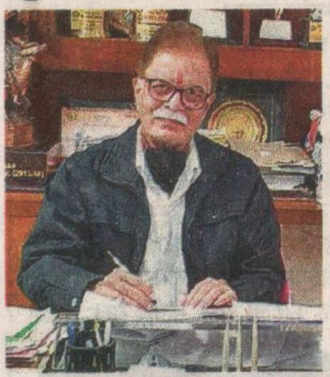

कृषि महाविद्यालय के नवनियुक्त अधिष्ठाता का कार्यभार संभालते डा. एके छाबड़ा।

जागरण संवाददाता, हिसार : हरियाणा कृषि विवि में डा. एके छाबड़ा को कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता का अतिरिक्त कार्यभार सौंपा गया है। डा. छाबड़ा के पास विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष का भी चार्ज है। साथ ही वे विश्वविद्यालय के ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली के चेयरमैन भी हैं। यह जानकारी विवि के कुलसचिव डा. बीआर कंबोज ने दी।

उन्होंने बताया कि इससे पहले कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता का चार्ज अनुसंधान निदेशक डा. एसके सहरावत को दिया हुआ था। डा. सहरावत को अब इस अतिरिक्त कार्यभार से मुक्त कर दिया गया है। गौरतलब है कि डा. एके छाबड़ा अंतरराष्ट्रीय स्तर के विज्ञानी हैं, जिन्होंने गेहूं, चना, मटर, मूंग सहित तिलहनी व औषधीय फसलों की कई उन्नत किस्मों को विकसित करने में अहम योगदान दिया है। इनके शैक्षणिक व अनुसंधान कार्यों के आधार पर इन्हें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली की ओर से सर्वश्रेष्ठ शिक्षक अवार्ड से भी नवाजा जा चुका है। इसके अलावा उनके राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर बहुत सारे बहुमूल्य रिसर्च पेपर, किताबें, मैनुअल आदि छप चुके हैं। डा. ए.के. छाबड़ा ने सोमवार को कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता के रूप में कार्यभार संभाल लिया है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर के विज्ञानी हैं डा. एके छाबड़ा, तिलहनी व औषधीय फसलों की कई उन्नत किस्मों को विकसित करने में दिया योगदान

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम: दैनिक भास्कर, अमर उजाला

दिनांक: 17.11.2020 पृष्ठ संख्या: 2, 4 कॉलम: 4, 7-8

डॉ. छाबड़ा को मिला एचएयू में कृषि कॉलेज के अधिष्ठाता का अतिरिक्त कार्यभार

हिसार | एचएयू में डॉ. एके छाबड़ा को कृषि कॉलेज के अधिष्ठाता का अतिरिक्त कार्यभार सौंपा गया है। डॉ. एके छाबड़ा के पास एचएयू के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष का भी चार्ज है। साथ ही वे विवि के ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली के चेयरमैन भी हैं। यह जानकारी विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज ने दी। उन्होंने बताया कि इससे पहले कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता का चार्ज अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत को दिया हुआ था। डॉ. सहरावत को अब इस अतिरिक्त कार्यभार से मुक्त किया गया है।

महाविद्यालय के अधिष्ठाता का अतिरिक्त कार्यभार

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में डॉ. एके छाबड़ा को कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता का अतिरिक्त कार्यभार सौंपा गया है। उनके पास विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष का भी चार्ज है। साथ ही वे विश्वविद्यालय के ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली के चेयरमैन भी हैं। डॉ. छाबड़ा ने सोमवार को कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता के रूप में कार्यभार संभाला। बता दें कि इससे पहले कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता का चार्ज अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत को दिया हुआ था।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पंजाब केसरी.....

दिनांक 17...11...2022...पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम.....8.....

'डॉ. छाबड़ा को दिया कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता का अतिरिक्त कार्यभार'

हिसार, 16 नवम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में डॉ. ए.के. छाबड़ा को कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता का अतिरिक्त कार्यभार सौंपा गया है। उनके पास विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष का भी चार्ज है। साथ ही वे विश्वविद्यालय के ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली के चेयरमैपन भी हैं। कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज ने बताया कि इससे पहले कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता का चार्ज अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के सहरावत को दिया हुआ था।

डॉ. ए.के. छाबड़ा अंतर्राष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिक हैं, जिन्होंने गेहूं, चना, मटर, मूंग सहित तिलहनी व औषधीय फसलों की कई उन्नत किस्मों को विकसित करने में अहम योगदान दिया है। इनके शैक्षणिक व अनुसंधान कार्यों के आधार पर इन्हें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली की ओर से सर्वश्रेष्ठ शिक्षक अवार्ड से भी नवाजा जा चुका है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	**17.11.2020**	——	--

डॉ. ए.के. छाबड़ा को दिया कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता का अतिरिक्त कार्यभार

डॉ. ए.के. छाबड़ा

हिसार, (सुरेंद्र सोढी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में डॉ. ए.के. छाबड़ा को कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता का अतिरिक्त कार्यभार सौंपा गया है। डॉ.ए.के. छाबड़ा के पास विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष का भी चार्ज है। साथ ही वे विश्वविद्यालय के ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली के चेयरमैपन भी हैं। यह जानकारी विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज ने दी। उन्होंने बताया कि इससे पहले कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता का चार्ज अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के सहरावत को दिया हुआ था। डॉ. सहरावत को अब इस अतिरिक्त कार्यभार से मुक्त कर दिया गया है। गौरतलब है कि डॉ. ए.के. छाबड़ा अंतरराष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिक हैं, जिन्होंने गेहूं, चना, मटर, मुंग सहित तिलहनी व औषधीय फसलों की कई उन्नत किस्मों को विकसित करने में अहम योगदान दिया है। इनके शैक्षणिक व अनुसंधान कार्यों के आधार पर इन्हें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली की ओर से सर्वश्रेष्ठ शिक्षक अवार्ड से भी नवाजा जा चुका है। इसके अलावा उनके राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर बहुत सारे बहुमूल्य रिसर्च पेपर, किताबें, मैनुअल आदि छप चुके हैं। डॉ. ए.के. छाबड़ा ने सोमवार को कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता के रूप में कार्यभार संभाल लिया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूं	**17.11.2020**	——	--

डॉ. छाबड़ा को दिया एचएयू में कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता का अतिरिक्त कार्यभार

हिसार(सच कहूँ न्यूज)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में डॉ. एके छाबड़ा को कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता का अतिरिक्त कार्यभार सौंपा गया है। डॉ.ए.के. छाबड़ा के पास विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष का भी चार्ज है। साथ ही वे विश्वविद्यालय के ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली के चेयरमैपन भी हैं। यह जानकारी विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज ने दी। उन्होंने बताया कि इससे पहले कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता का चार्ज अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के सहरावत को दिया हुआ था। डॉ. सहरावत को अब इस अतिरिक्त कार्यभार से मुक्त कर दिया गया है। गौरतलब है कि डॉ. ए.के. छाबड़ा अंतरराष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिक हैं, जिन्होंने गेहूं, चना, मटर, मुंग सहित तिलहनी व औषधीय फसलों की कई उन्नत किस्मों को विकसित करने में अहम योगदान दिया है। इनके शैक्षणिक व अनुसंधान कार्यों के आधार पर इन्हें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली की ओर से सर्वश्रेष्ठ शिक्षक अवार्ड से भी नवाजा जा चुका है। इसके अलावा उनके राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर बहुत सारे बहुमूल्य रिसर्च पेपर, किताबें, मैनुअल आदि छप चुके हैं। डॉ. ए.के. छाबड़ा ने सोमवार को कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता के रूप में कार्यभार संभाल लिया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	**17.11.2020**	——	--

डॉ. ए.के. छाबड़ा को दिया एचएयू में कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता का अतिरिक्त कार्यभार

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में डॉ. ए.के. छाबड़ा को कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता का अतिरिक्त कार्यभार सौंपा गया है। डॉ.ए.के. छाबड़ा के पास विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष का भी चार्ज है। साथ ही वे विश्वविद्यालय के ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली के चेयरमैपन भी हैं। यह

जानकारी विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज ने दी। उन्होंने बताया कि इससे पहले कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता का चार्ज अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के सहरावत को दिया हुआ था। डॉ. सहरावत को अब इस अतिरिक्त कार्यभार से मुक्त कर दिया गया है। गौरतलब है कि डॉ. ए.के. छाबड़ा अंतरराष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिक हैं, जिन्होंने गेहूं, चना, मटर, मुंग सहित तिलहनी व औषधीय फसलों की कई उन्नत किस्मों को विकसित करने में अहम योगदान दिया है। इनके शैक्षणिक व अनुसंधान कार्यों के आधार पर इन्हें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली की ओर से सर्वश्रेष्ठ शिक्षक अवार्ड से भी नवाजा जा चुका है। इसके अलावा उनके राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर बहुत सारे बहुमूल्य रिसर्च पेपर, किताबें, मैनुअल आदि छप चुके हैं। डॉ. ए.के. छाबड़ा ने सोमवार को कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता के रूप में कार्यभार संभाल लिया है।श

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जगमार्ग न्यूज	**17.11.2020**	——	--

डॉ. छबड़ा को दिया एचएयू में कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता का अतिरिक्त कार्यभार

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में डॉ. एके छबड़ा को कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता का अतिरिक्त कार्यभार सौंपा गया है। डॉ. एके छबड़ा के पास विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष का भी चार्ज है। साथ ही वे विश्वविद्यालय के ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली के चेयरमैन भी हैं। विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज ने बताया कि इससे पहले कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता का चार्ज अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के सहरावत को दिया हुआ था। डॉ. सहरावत को अब इस अतिरिक्त कार्यभार से मुक्त कर दिया गया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिसार टूडे	**17.11.2020**	——	--

'टीम भावना से मिलती है हर काम में सफलता'

ज्वार की उन्नत किस्म सीएसवी 44 एफ विकसित करने वाले एचएयू वैज्ञानिकों के सम्मान में कार्यक्रम आयोजित

टुडे न्यूज | हिसार

किसी भी सामूहिक काम को करने के लिए टीम भावना का होना बहुत ही जरूरी है। टीम भावना से किए गए हर काम में सफलता सुनिश्चित है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय में ज्वार की उन्नत किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिकों की टीम के सम्मान में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की सराहना करते हुए कहा कि यह टीम भावना का ही परिणाम है कि वर्तमान में विश्वविद्यालय दिन दौगुणी रात चौगुणी उन्नति के पथ पर अग्रसर है। आज विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों का ही नतीजा है कि प्रदेश का देश के खाद्यान भण्डारण में अहम योगदान है। कार्यक्रम का आयोजन कुलपति सचिवालय में किया गया। इस दौरान उन्नत किस्म विकसित करने वाली वैज्ञानिकों की टीम को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

ज्वार की उन्नत किस्म विकसित करने ाले वैज्ञानिकों के साथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह व अन्य।

उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे किसानों की दशा व दिशा को ध्यान में रखकर ही शोध कार्य करें ताकि उनकी आर्थिक स्थिति ओर अधिक मजबूत हो सके। विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा के अनुसार सीएसवी 44 एफ किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. एस.के. पाहुजा, डॉ. एन.के. ठकराल एवं डॉ. डी.एस. फोगाट की टीम की मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डॉ. सतपाल, डॉ. जयंती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक एवं डॉ. सरिता देवी का भी विशेष सहयोग रहा है। इन्ही वैज्ञानिकों के उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए इन्हें सम्मानित किया गया। है। विभागाध्यक्ष ने बताया कि ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। एचएयू में विकसित ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यतः कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की गई है।

किस्म की यह है खासियत

सीएसवी 44 एफ किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है, जिसकी वजह से पशु के दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी करती है। इस किस्म में मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक व स्वादिष्ट होने के कारण पशु इसको खाना अधिक पसंद करते हैं। सिफारिश किए गए उचित खाद व सिंचाई प्रबंधन के अनुसार यह किस्म अधिक पैदावार देने में सक्षम है। अधिक बारिश व तेज़ हवा चलने पर भी यह किस्म गिरती नहीं है। ज्वार में प्राकृतिक तौर पर पाया जाने वाला विषैला तत्व धूरिन इस किस्म में बहुत ही कम है। सीएसवी 44 एफ किस्म तनाछेदक कीट के प्रति प्रतिरोधी है व इसमें पत्तों पर लगने वाले रोग भी नहीं लगते। वैज्ञानिकों के अनुसार चारा उत्पादन, पौष्टिकता एवं रोग प्रतिरोधकता की दृष्टि से यह एक उत्तम किस्म है। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 407 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। जोकि ज्वार की अन्य बेहतर किस्मों सीएसवी 21 एफ और सीएसवी 30 एफ से क्रमशः 7.5 प्रतिशत व 5.8 प्रतिशत अधिक है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	**16.11.2020**	——	--

डॉ. छाबड़ा को मिला कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता का अतिरिक्त कार्यभार

पांच बजे न्यूज

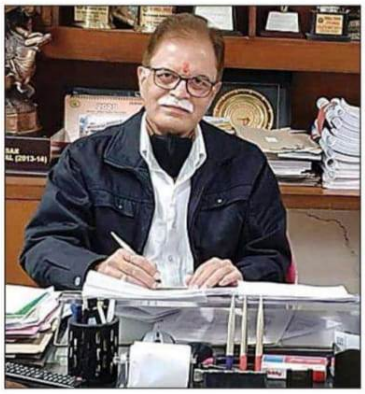

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में डॉ. ए.के. छाबड़ा को कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता का अतिरिक्त कार्यभार सौंपा गया है। डॉ.ए.के. छाबड़ा के पास विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष का भी चार्ज है। साथ ही वे विश्वविद्यालय के ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली के चेयरमैपन भी हैं। यह जानकारी विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज ने दी। उन्होंने बताया कि इससे पहले कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता का चार्ज अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के सहरावत को दिया हुआ था। डॉ. सहरावत को अब इस अतिरिक्त कार्यभार से मुक्त कर दिया गया है। गौरतलब है कि डॉ. ए.के. छाबड़ा अंतरराष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिक हैं, जिन्होंने गेहूं, चना, मटर, मुंग सहित तिलहनी व औषधीय फसलों की कई उन्नत किस्मों को विकसित करने में अहम योगदान दिया है। इनके शैक्षणिक व अनुसंधान कार्यों के आधार पर इन्हें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली की ओर से सर्वश्रेष्ठ शिक्षक अवार्ड से भी नवाजा जा चुका है। इसके अलावा उनके राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर बहुत सारे बहुमूल्य रिसर्च पेपर, किताबें, मैनुअल आदि छप चुके हैं। डॉ. ए.के. छाबड़ा ने सोमवार को कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता के रूप में कार्यभार संभाल लिया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	**16.11.2020**	——	--

डॉ. छाबड़ा ने संभाला कृषि महाविद्यालय डीन का अतिरिक्त चार्ज

हिसार/16 नवंबर/रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में डॉ. एके छाबड़ा को कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता का अतिरिक्त कार्यभार सौंपा गया है। डॉ. छाबड़ा के पास विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष का भी चार्ज है। साथ ही वे विश्वविद्यालय के ऑनलाईन शिक्षा प्रणाली के चेयरमैपन भी हैं। यह जानकारी विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बीआर कंबोज ने दी। उन्होंने बताया कि इससे पहले कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता का चार्ज अनुसंधान निदेशक डॉ.

एसके सहरावत को दिया हुआ था। डॉ. सहरावत को अब इस अतिरिक्त कार्यभार से मुक्त कर दिया गया है। गौरतलब है कि डॉ. एके छाबड़ा अंतर्राष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिक हैं, जिन्होंने गेहूं, चना, मटर, मूंग सहित तिलहनी व औषधीय फसलों की कई उन्नत किस्मों को विकसित करने में अहम योगदान दिया है। इनके शैक्षणिक व अनुसंधान कार्यों के आधार पर इन्हें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली की ओर से सर्वश्रेष्ठ शिक्षक अवार्ड से भी नवाजा जा चुका है। इसके अलावा उनके राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर बहुत सारे बहुमूल्य रिसर्च पेपर, किताबें, मैनुअल आदि छप चुके हैं। डॉ. छाबड़ा ने आज कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता के रूप में कार्यभार संभाल लिया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	**16.11.2020**	——	--

डॉ. एके छाबड़ा को दिया हरियाणा कृषि विवि में कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठता का अतिरिक्त कार्यभार

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में डॉ. ए.के. छाबड़ा को कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता का अतिरिक्त कार्यभार सौंपा गया है। डॉ. एके छाबड़ा के पास विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष का भी चार्ज है। साथ ही वे विश्वविद्यालय के ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली के चेयरमैन भी हैं। यह जानकारी विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज ने दी। उन्होंने बताया कि इससे पहले कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता का चार्ज अनुसंधान निदेशक डॉ. एस. के सहरावत को दिया हुआ था। डॉ. सहरावत को अब इस अतिरिक्त कार्यभार से मुक्त कर दिया गया है। डॉ. छाबड़ा अंतर्राष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिक हैं, जिन्होंने गेहूं, चना, मटर, मूंग सहित तिलहनी व औषधीय फसलों की कई उन्नत किस्मों को विकसित करने में अहम योगदान दिया है। इनके शैक्षणिक व अनुसंधान कार्यों के आधार पर इन्हें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली की ओर से सर्वश्रेष्ठ शिक्षक अवार्ड से भी नवाजा जा चुका है। इसके अलावा उनके राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर बहुत सारे बहुमूल्य रिसर्च पेपर, किताबें, मैनुअल आदि छप चुके हैं। डॉ. ए.के. छाबड़ा ने सोमवार को कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता के रूप में कार्यभार संभाल लिया है।

हिसार। एचएयू में कृषि महाविद्यालय के नवनियुक्त अधिष्ठाता डॉ. ए.के. छाबड़ा कार्यभार संभालते हुए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	**17.11.2020**	——	--

एचएयू के स्थापना दिवस पर पूर्व छात्र मिलन समरोह का आयोजन

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्विद्यालय स्थित कैंपस स्कूल के स्थापना दिवस, पूर्व संध्या पर कैंपस स्कूल की नवगठित एलुम्नाई एसोसिएशन द्वारा एक मिलन समारोह का आयोजन किया गया। 1971 में स्थापित यह स्कूल इस साल अपनी स्वर्ण जयंती मना रहा है। इस समारोह में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. समर सिंह मुख्य अतिथि व कुलसचिव डॉ. बी???. आर. कम्बोज विशिष्ट अतिथि थे। समारोह की अध्यक्षता स्कूल के नियंत्रक अधिकारी डॉ. संजय ठकराल ने की। कुलपति ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। अपने सम्बोधन में कुलपति ने कैंपस स्कूल के 50 साल के इतिहास को याद करते हुए विभिन्न क्षेत्रों में अपना लोहा मनवाने वाले स्कूल के पूर्व छात्रों का जिक्र किया। कुलपति ने नवगठित कैंपस स्कूल सी सी एस एएयू एलुम्नाई एसोशिएशन को बधाई देते हुए विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से पूर्ण सहयोग का भरोसा दिलाया।

एसोशिएशन के प्रधान अजय सिहाग ने अतिथियों का स्वागत करते हुए एसोशिएशन के गठन तथा उसके प्रस्तावित कामकाज का उल्लेख किया। इस अवसर पर एसोशिएशन ने स्कूल से सेवानिवृत व वर्तमान अध्यापकों को सम्मानित भी किया। पूर्व-छात्रों की एसोशिएशन में डॉ. रीना को उप-प्रधान, संदीप चोपड़ा को ट्रेजरर, अजय नैन को महासचिव तथा सुमन कामरा को संयुक्त सचिव चुना गया है। मिलन समारोह में सैकड़ों पूर्व छात्रों ने भाग लिया और अपने अनुभव साँझा किए। गौरतलब है कि अरविंद केजरीवाल, सायना नेहवाल, नवीन जिंदल जैसी बड़ी हस्तियाँ कैंपस स्कूल से ही पढ़ी हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिसार टूडे	**17.11.2020**	——	--

एचएयू के स्थापना दिवस पर पूर्व छात्र मिलन समरोह का आयोजन

टुडे न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्विद्यालय स्थित कैंपस स्कूल के स्थापना दिवस, पूर्व संध्या पर कैंपस स्कूल की नवगठित एलुम्नाई एसोसिएशन द्वारा एक मिलन समारोह का आयोजन किया गया। 1971 में स्थापित यह स्कूल इस साल अपनी स्वर्ण जयंती मना रहा है। इस समारोह में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. समर सिंह मुख्य अतिथि व कुलसचिव डॉ. बी. आर. कम्बोज विशिष्ट अतिथि थे। समारोह की अध्यक्षता स्कूल के नियंत्रक अधिकारी डॉ. संजय ठकराल ने की। कुलपति ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। अपने सम्बोधन में कुलपति ने कैंपस स्कूल के 50 साल के इतिहास को याद करते हुए विभिन्न क्षेत्रों में अपना लोहा मनवाने वाले स्कूल के पूर्व छात्रों का जिक्र किया। कुलपति ने नवगठित कैंपस स्कूल सी सी एस एएयू एलुम्नाई एसोशिएशन को बधाई देते हुए विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से पूर्ण सहयोग का भरोसा दिलाया। एसोशिएशन के प्रधान अजय सिहाग ने अतिथियों का स्वागत करते हुए एसोशिएशन के गठन तथा उसके प्रस्तावित कामकाज का उल्लेख किया। इस अवसर पर एसोशिएशन ने स्कूल से सेवानिवृत व वर्तमान अध्यापकों को सम्मानित भी किया। पूर्व-छात्रों की एसोशिएशन में डॉ. रीना को उप-प्रधान, संदीप चोपड़ा को ट्रेजरर, अजय नैन को महासचिव तथा सुमन कामरा को संयुक्त सचिव चुना गया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	**17.11.2020**	——	--

एचएयू के स्थापना दिवस पर पूर्व छात्र मिलन समरोह का आयोजन

पूर्व छात्र मिलन समारोह में कुलपति व कैंपस की पुरानी हस्तियां।

हिसार, (सुरेंद्र सोढी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्विद्यालय स्थित कैंपस स्कूल के स्थापना दिवस, पूर्व संध्या पर कैंपस स्कूल की नवगठित एलुम्नाई एसोसिएशन द्वारा एक मिलन समारोह का आयोजन किया गया। 1971 में स्थापित यह स्कूल इस साल अपनी स्वर्ण जयंती मना रहा है। इस समारोह में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. समर सिंह मुख्यातिथि व कुलसचिव डॉ. बी. आर. कम्बोज विशिष्ट अतिथि थे। समारोह की अध्यक्षता स्कूल के नियंत्रक अधिकारी डॉ. संजय ठकराल ने की। कुलपति ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। अपने सम्बोधन में कुलपति ने कैंपस स्कूल के 50 साल के इतिहास को याद करते हुए विभिन्न क्षेत्रों में अपना लोहा मनवाने वाले स्कूल के पूर्व छात्रों का जिक्र किया। कुलपति ने नवगठित कैंपस स्कूल सी सी एस एएयू एलुम्नाई एसोशिएशन को बधाई देते हुए विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से पूर्ण सहयोग का भरोसा दिलाया। एसोशिएशन के प्रधान अजय सिहाग ने अतिथियों का स्वागत करते हुए एसोशिएशन के गठन तथा उसके प्रस्तावित कामकाज का उल्लेख किया। इस अवसर पर एसोशिएशन ने स्कूल से सेवानिवृत व वर्तमान अध्यापकों को सम्मानित भी किया। पूर्व-छात्रों की एसोशिएशन में डॉ. रीना को उप-प्रधान, संदीप चोपड़ा को ट्रेजरर, अजय नैन को महासचिव तथा सुमन कामरा को संयुक्त सचिव चुना गया है। मिलन समारोह में सैकड़ों पूर्व छात्रों ने भाग लिया और अपने अनुभव साँझा किए। गौरतलब है कि अरविंद केजरीवाल, सायना नेहवाल, नवीन जिंदल जैसी बड़ी हस्तियां कैंपस स्कूल से ही पढ़ी हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	**16.11.2020**	——	--

एचएयू के स्थापना दिवस पर पूर्व छात्र मिलन समरोह का आयोजन

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 16 नवम्बर : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्विद्यालय स्थित कैंपस स्कूल के स्थापना दिवस, पूर्व संध्या पर कैंपस स्कूल की नवगठित एलुम्नाई एसोसिएशन द्वारा एक मिलन समारोह का आयोजन किया गया। 1971 में स्थापित यह स्कूल इस साल अपनी स्वर्ण जयंती मना रहा है। इस समारोह में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. समर सिंह मुख्य अतिथि व कुलसचिव डॉ. बी. आर. कम्बोज विशिष्ट अतिथि थे। समारोह की अध्यक्षता स्कूल के नियंत्रक अधिकारी डॉ. संजय ठकराल ने की। कुलपति ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। अपने सम्बोधन में कुलपति ने कैंपस स्कूल के 50 साल के इतिहास को याद करते हुए विभिन्न क्षेत्रों में अपना लोहा मनवाने वाले स्कूल के पूर्व छात्रों का जिक्र किया। कुलपति ने नवगठित कैंपस स्कूल सी सी एस एएयू एलुम्नाई एसोशिएशन को बधाई देते हुए विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से पूर्ण सहयोग का भरोसा दिलाया। एसोसिएशन के प्रधान अजय सिहाग ने अतिथियों का स्वागत करते हुए एसोशिएशन के गठन तथा उसके प्रस्तावित कामकाज का उल्लेख किया। इस अवसर पर एसोशिएशन ने स्कूल से सेवानिवृत व वर्तमान अध्यापकों को सम्मानित भी किया। पूर्व-छात्रों की एसोशिएशन में डॉ. रीना को उप-प्रधान, संदीप चोपड़ा को ट्रेजरर, अजय नैन को महासचिव तथा सुमन कामरा को संयुक्त सचिव चुना गया है। मिलन समारोह में सैकड़ों पूर्व छात्रों ने भाग लिया और अपने अनुभव साँझा किए। गौरतलब है कि अरविंद केजरीवाल, सायना नेहवाल, नवीन जिंदल जैसी बड़ी हस्तियाँ कैंपस स्कूल से ही पढ़ी हैं।